

गृह-प्रवेश



नए घर में प्रवेश से पूर्व वास्तु शांति अर्थात यज्ञादि धार्मिक कार्य अवश्य करवाने चाहिए। वास्तु शांति कराने से भवन की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त हो जाती है तभी घर शुभ प्रभाव देता है। जिससे जीवन में खुशी व सुख-समृद्धि आती है। वास्तु-शास्त्र के अनुसार मंगलाचरण सहित वाद्य ध्वनि करते हुए कुलदेव की पूजा व बड़ों का सम्मान करके और ब्राह्मणों को प्रसन्न करके गृह प्रवेश करना चाहिए।

आप जब भी कोई नया घर या मकान खरीदते हैं तो उसमें प्रवेश से पहले उसकी वास्तु शांति करायी जाती है। जाने अनजाने हमारे द्वारा खरीदे या बनाये गये मकान में कोई भी दोष हो तो वास्तु शांति करवा के दोष को दूर किया जाता है। इसमें वास्तु देव का विशेष पूजन किया जाता है, जिससे हमारे घर में सुख शांति बनी रहती है।

वास्तु का अर्थ है मनुष्य और भगवान का रहने का स्थान। वास्तु शास्त्र प्राचीन विज्ञान है जो सृष्टि के मुख्य तत्वों के द्वारा निःशुल्क देने में आने वाले लाभ प्राप्त करने में मदद करता है। ये मुख्य तत्व हैं-आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु। वास्तु देव वास्तव में दिशाओं के, प्रकृति के पांच तत्वों के, प्राकृतिक स्रोतों और उसके साथ जुड़ी हुई वस्तुओं के देव हैं। हम प्रत्येक प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए वास्तु शांति करवाते हैं। उसके कारण ज़मीन या बांधकाम में, प्रकृति अथवा वातावरण में रहा हुआ वास्तु दोष दूर होता है। वास्तु दोष हो वैसी बिल्डींग में कोई बड़ा भाग तोड़ करने के लिए वास्तु शास्त्र के अनुसार पूजा करने में आती है। उर्पयुक्त हिसाब से परिस्थिति में प्रकृति या वातावरण के द्वारा होने वाली खराब असर को टालने के लिए आपको एक निश्चित वास्तु शांति करनी चाहिए।

वास्तु शांति (गृह प्रवेश के पूजन) की विधि-

स्वस्तिवचन, गणपति स्मरण, संकल्प, श्री गणपति पूजन, कलश स्थापन और पूजन, पुनःवचन, अभिषेक, शोडशमातेर का पूजन, वसोधरा पूजन, औशेया मंत्रजाप, नान्दी श्राद्ध, आचार्य आदि का वरेण, योगने

पूजन, क्षेत्रपाल पूजन, अग्नि स्थापन, नवग्रह स्थापन और पूजन, वास्तु मंडला पूजन और स्थापन, गृह हवन, वास्तु देवता होम, बलिदान, पूर्णाहुति, त्रिसुत्रेवस्तेन, जलदुग्धारा और ध्वजा पताका स्थापन, वास्तुपुरुष-प्रार्थना, दक्षिणा संकल्प, ब्राह्मण भोजन, उत्तर भोजन, अभिषेक, विसर्जन उपयुक्त वास्तु शांति पूजा के हिस्सा है।

गृह-प्रवेश के आरंभ में गृह-वास्तु की शांति अवश्य कर लेनी चाहिए। यह गृह मनुष्य के लिए ऐहिक एवं पारलौकिक सुख तथा शान्तिप्रद बने इस उद्देश्य से गृह वास्तु शांति कर्म का प्रतिपादन ऋषियों द्वारा किया गया है। कर्मकाण्ड में वास्तुशांति का विषय अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि जरा सी भी त्रुटि रह जाने से लाखों एवं करोड़ों रुपये व्यय करके बनाया हुआ गृह अनिष्टकारी अथवा गृह निर्माणकर्ता, शिल्पकार अथवा गृह वास्तु शांति कराने वाले विद्वान के लिए घातक हो सकता है। वास्तु शांति करवाने वाले योग्य पंडित का चुनाव अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है, कारण कि वास्तु शांति का कार्य यदि वैदिक विधि द्वारा पूर्णतः संपन्न नहीं होता तो गृहपिण्ड एवं गृहप्रवेश का मुहूर्त भी निरर्थक हो जाता है। अतः गृह निर्माण कर्ता को कर्मकाण्डी विद्वान का चुनाव अत्यधिक विचारपूर्वक करना चाहिए।

गृहशांति पूजन करवाने से लाभ

- यदि गृहस्वामी गृह-प्रवेश के पूर्व गृह-शांति पूजन संपन्न कराता है, तो वह सदैव सुख को प्राप्त करता है।
- लक्ष्मी का स्थाई निवास रहता है, गृह निर्माता को धन से संबंधित ऋण आदि की समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता है।
- घर का वातावरण भी शांत, सुकून प्रदान करने वाला होता है। बीमारीयों से बचाव होता है।
- घर में रहने वाले लोग प्रसन्नता, आनंद आदि का अनुभव करते हैं।
- किसी भी प्रकार के अमंगल, अनिष्ट आदि होने की संभावना समाप्त हो जाती है।
- घर में देवी-देवताओं का वास होता है, उनके प्रभाव से भूत-प्रेतादि की

बाधाएं नहीं होती एवं उनका जोर नहीं चलता।

- घर में वास्तुदोष नहीं होने से एवं गृह वास्तु देवता के प्रसन्न होने से हर क्षेत्र में सफलता मिलती है।
- सुसज्जित भवन में गृह स्वामी अपनी धर्मपत्नी तथा परिवारीक जनों के साथ मंगल गीतादि से युक्त होकर यदि नवीन गृह में प्रवेश करता है तो वह अत्यधिक श्रेष्ठ फलदायक होता है।

नींव पूजा-

नया घर बनाने से पूर्व पंडित से अच्छा मुहूर्त दिखा कर नींव पूजा की जाती है। नींव पूजा में छोटे-छोटे ताम्बे के पांच कलश (सभी कलश में छोटी-छोटी सोने की टिकड़ी डाल कर), चाँदी का नाग-नागिन का जोड़ा-१, चाँदी का कछुआ-१, पंडित द्वारा पूजा कर के नींव में रखा जाता है।

नींव के ऊपर तीन दिन संध्या समय घी का एक दीपक जलाया जाता है। इस समय काम आने वाली तगारी, औजार तथा इंटें आदि घर मालिक द्वारा नए लाने चाहिए।

गृह प्रवेश की विधि-

पंडित से मुहूर्त निकलवा कर नए घर में ३ दिन-५ दिन-७ दिन, जैसे पंडित जी कहे उस अनुसार पूजा बिठाई जाती है। जिसे गृह-शान्ति या देवी देवता प्रसन्न करने की पूजा कहते हैं।

यह पूजा नए घर में होती है। इस घर में मुहूर्त होने तक खाना नहीं पकाया जाता। पंडितों का खाना भी आप पहले जहाँ रह रहे हों वहाँ से आता है।

तत्पश्चात पुराने घर से पंडित जी विधिवत गणेश पूजन कर के, मंगल कलश में शुद्ध जल भरकर उसमें आम के पांच या ग्यारह पत्तों के बीच नारियल रखें। कलश व हरा नारियल पर कुमकुम से स्वस्तिक का चिन्ह बनाएं। नए घर में प्रवेश के समय घर की स्वामिनी अपने सर पर यह कलश रखे और गृह स्वामी अपने पुराने भगवान् को लेकर नए घर में

प्रवेश करना चाहिए।

गृह प्रवेश एक जोड़ा, दो जोड़ा, चार जोड़ा या ७ जोड़ा से प्रवेश करना चाहिए। घर की स्त्रियाँ, कोई चांदी के प्याले में दही ले कर, कोई गहना का डब्बा लेकर एवं पुरुष हरा नारियल या हरे फल ले कर घर में प्रवेश करते हैं। कोई भी खाली हाथ प्रवेश नहीं करता है।

भगवान गणेश की मूर्ति, दक्षिणावर्ती शंख, श्री यंत्र को गृह प्रवेश वाले दिन घर में ले जाना चाहिए।

गृह प्रवेश से पहले घर के बाहर, बाछी की माँ गाय की पूजा कर के उसे साड़ी-ब्लाउज ओढ़ा कर व गाय ले कर आने वाले को रुपैया दिया जाता है, वहीं पांच कुंवारी ८/९ वर्ष उम्र की कन्याओं की भी पूजा की जाती है और उन्हें रुपैया या कपड़ा दिया जाता है।

घर के गेट पर केले के थांब लगाना चाहिए और घर को बंदनवार, रंगोली, फूलों से सजाना चाहिए।

मंगल गीतों के साथ नए घर में प्रवेश करना चाहिए। पुरुष पहले दाहिना पैर तथा स्त्री बाया पैर बढ़ा कर नए घर में प्रवेश करें।

गृह प्रवेश के बाद, अन्दर घुसते ही पहले तोरण की, सुआ (तोता) की पूजा करते हैं।

घर में घुसते समय धान का लावा और दूब छिड़कते हुए प्रवेश करते हैं। तत्पश्चात तनी की पूजा कर के तनी बाँधी जाती है।

तनी बाँधने के बाद घट्टी या मिक्सी की पूजा, भाड़ू की पूजा और चूल्हा या गैस की पूजा कि जाती है।

रसोई की पूजा-

किचन में गैस चूल्हा, पानी रखने के स्थान और स्टोर की जगह धूप, दीपक के साथ कुमकुम, हल्दी, चावल आदि से पूजन कर स्वस्तिक चिन्ह बना देने चाहिए। पहले दिन रसोई में गुड़ व हरी सब्जी रखना चाहिए। चूल्हे पर दूध उफानना चाहिए। दूध उफानने का टोपिया, कुकर व कढ़ाई नई लानी चाहिए। कोई मिठाई बनाकर उसका भोग लगाना चाहिए। पील

चावल या लापसी व बड़ी की सब्जी बनाई जा सकती है। घर में बनाया भोजन सबसे पहले भगवान को भोग लगाएं। गौग्रास निकाल कर अपने परिवार, मित्रों के साथ ब्राह्मण भोजन कराएं।

गृह के आन्तरिक कक्ष

घर के भीतर किस दिशामें कौनसा कक्ष होना चाहिये इसको विभिन्न ग्रन्थों में इस प्रकार बताया गया है-

- ☞ पूर्व में- स्नानगृह।
- ☞ आग्नेय में- रसोई।
- ☞ दक्षिण में- शयनकक्ष, ओखली रखने का स्थान।
- ☞ नैऋत्य में- शस्त्रागार, सूतिकागृह, वस्त्र रखने का स्थान, गृहसामग्री, शौचालय, बड़े भाई अथवा पिता का कमरा।
- ☞ पश्चिम में- भोजन करने का स्थान।
- ☞ वायव्य में- अन्न-भण्डार, पशुगृह, शौचालय।
- ☞ उत्तर में- देवगृह, भण्डार, जल रखने का स्थान, धन-संग्रह का स्थान।
- ☞ ईशान में- देवगृह (पूजागृह), जल रखने का स्थान।
- ☞ पूर्व-आग्नेय में- मन्थन-कार्य करने का स्थान।
- ☞ आग्नेय-दक्षिण में- घृत रखने का स्थान।
- ☞ दक्षिण-नैऋत्य में- शौचालय।
- ☞ नैऋत्य-पश्चिम में- विद्याभ्यास।
- ☞ वायव्य-उत्तर में- रतिगृह।
- ☞ उत्तर-ईशान में- औषध रखने तथा चिकित्सा करनेका स्थान।
- ☞ ईशान-पूर्व में- सब वस्तुओं का संग्रह करनेका स्थान।

१) तहखाना पूर्व, उत्तर अथवा ईशानकी तरफ बनाना चाहिये।

२) भारी सामान नैऋत्य दिशामें रखना चाहिये। पूर्व, उत्तर अथवा ईशान में भारी सामान यथासम्भव नहीं रखना चाहिये।

- ३) जिस कार्य में अग्नि की आवश्यकता पड़ती हो, वह कार्य आग्नेय दिशा में करना चाहिये।
- ४) दीपक का मुख यदि पूर्व की ओर करके रखा जाये तो आयु की वृद्धि होती है, उत्तर की ओर करके रखा जाये तो धनकी प्राप्ति होती है, पश्चिम की ओर करके रखा जाये तो दुःख प्राप्त होता है और दक्षिण की जगह बल्ब, ट्यूबलाइट आदि समझने चाहिये।
- ५) बीच में नीचा तथा चारों ओर ऊँचा आँगन होने से पुत्रका नाश होता है।
- ६) यदि घर के पश्चिम में दो दरवाजे अथवा दो कमरे हों, तो उस घर में रहने से दुःख की प्राप्ति होती है।
- ७) दुकान, आफिस, फैक्ट्री आदि में मालिक को पूर्व अथवा उत्तर की ओर मुख करके बैठना चाहिये।
- ८) दुकान की वायव्य दिशा में रखा गया माल शीघ्र बिकता है। फैक्ट्री में भी तैयार माल वायव्य दिशा में रखना चाहिये। भारी मशीन आदि पश्चिम-दक्षिण में रखनी चाहिये।
- ९) दुकान का मुख वायव्य दिशा में होने से बिक्री अच्छी होती है।
- १०) ईशान दिशा में पति-पत्नी को शयन नहीं करना चाहिये, अन्यथा कोई बड़ा रोग हो सकता है।
- ११) पूजा-पाठ, ध्यान, विद्याध्ययन आदि सभी शुभ कार्य पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके ही करने चाहिये।
- १२) नृत्यशाला पूर्व, पश्चिम, वायव्य और आग्नेय दिशा में बनानी चाहिये।
- १३) घर के नैऋत्य भाग में किरायेदार या अतिथि को नहीं ठहराना चाहिये, अन्यथा वह स्थायी हो सकता है। उन्हें वायव्य भाग में ठहराना ही उचित है।

इनका ध्यान रखें अपने नए या पुराने घर में—

रुरसोई घर में पूजा की आलमारी या मंदिर नहीं रखना चाहिए।

रुवेडरूम में भगवान के कैलेंडर, तस्वीरें या फिर धार्मिक आस्था से जुड़ी वस्तुएं न रखें।

रुघर में टायलेट के बगल में देवस्थान नहीं होना चाहिए।

रुअपने घर में ईशान कोण अथवा ब्रह्मस्थल में स्फटिक श्रीयंत्र की शुभ मुहूर्त में

स्थापना करें। यह यन्त्र लक्ष्मीप्रदायक भी होता है, साथ ही साथ घर में स्थित वास्तुदोषों का भी निवारण करता है।

रुधर के सभी प्रकार के वास्तु दोष दूर करने के लिए मुख्य द्वार पर एक ओर केले का वृक्ष दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगायें।

रुदुकान की शुभता बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।

रुहल्दी को जल में घोलकर एक पान के पत्ते की सहायता से अपने सम्पूर्ण घर में छिड़काव करें। इससे घर में लक्ष्मी का वास तथा शांति भी बनी रहती है।

रुधर में उत्पन्न वास्तुदोष घर के मुखिया को कष्टदायक होते हैं। इसके निवारण के लिये घर के मुखिया को सातमुखी रूद्राक्ष धारण करना चाहिए।

रुयदि आपके घर का मुख्य द्वार दक्षिणमुखी है, तो यह भी मुखिया के लिये हानिकारक होता है। इसके लिये मुख्यद्वार पर श्वेतार्क गणपति की स्थापना करनी चाहिए।

रुअपने घर के पूजा घर में देवताओं के चित्र भूलकर भी आमने-सामने नहीं रखने चाहिए इससे बड़ा दोष उत्पन्न होता है।

रुपूजाकक्ष की दीवारों का रंग सफ़ेद हल्का पीला अथवा हल्का नीला होना चाहिए।

रुयदि भाडू के बार-बार पैर का स्पर्श होता है, तो यह धन-नाश का कारण होता है। भाडू के ऊपर कोई वजनदार वस्तु भी नहीं रखें। ध्यान रखें की बाहर से आने वाले व्यक्ति की दृष्टि भाडू पर न पड़े।

रुधर की पूर्वोत्तर दिशा में पानी का कलश रखें। इससे घर में समृद्धि आती है।

रुजो मकान बहुत वर्षों से रिक्त हो उसको वास्तु-शांति के बाद में उपयोग में लेना चाहिए। वास्तु-शांति के बाद उस घर को तीन महिने से अधिक समय तक खाली मत रखें।

रुभंडार घर कभी भी खाली मत रखें।

रुधर में पानी से भरा मटका हो वहां पर रोज सांझ को दीपक जलाएं।

रुशिला न्यास सर्वप्रथम आग्नेय दिशा में करना चाहिए।